Sanskrit

Sl. No.	Sem	Type of course	Name of Course	Credit	Marks
1.	i	MJC-1	व्याकरण–संज्ञा, सन्धि, सुबन्त, तिङन्तएव लकार–परिचय	06	100
2.	ii	MJC-2	संस्कृतकाव्य	06	100
3.	iii	MJC-3	संस्कृतसाहित्यका इतिहास–वैदिक एवं लौकिक	05	100
4.	iii	MJC-4	वेदएव उपनिषद्	04	100
5.	iv	MJC-5	काव्य–शास्त्र	05	100
6.	iv	MJC-6	सस्कृत–नाटक	05	100
7.	iV	MJC-7	व्याकरण–कारक एव वाच्य	05	100
8.	V	MJC-8	भारतीय दर्शन	05	100
9.	V	MJC-9	भगवद्गीता	05	100
10.	vi	MJC-10	सस्कृत गद्य साहित्य	04	100
11.	vi	MJC-11	व्याकरण–कृत्, तद्धित्एव स्त्री-प्रत्यय	05	100
12.	vi	MJC-12	पत्र–लेखन निबंधएव अनुवाद	05	100
13.	vii	MJC-13	महाकाव्य	05	100
14.	vii	MJC-14	संस्कृतकथा साहित्य–पंचतंत्रएव हितोपदेश	05	100
15.	vii	MJC-15	व्याकरण–समास एवंनामधातु	06	100
16.	viii	MJC-16	शोध पद्धति	04	100

Study Origin.com

Bachelor of Arts (Honours) Sanskrit under FYUGP
UNIVRESITY OF BIHAR, PATNA

SEMESTER-II (Pattern – 70+30=100)

MJC- II: संस्कृत काव्य

Theory:5 Credits+Tutorial: 1 credit= 6 credits

उद्देश्य

व्यक्तित्व के विकास के लिए काव्य-साहित्य का सेवन नितांत आवश्यक है। शास्त्रों में वर्णित है–

संसारविषवृक्षस्य द्वे एव मधुरे फले।
काव्यामृत रसास्वादः संगमः सज्जनैः सह।।

छात्र छात्राओं के जीवन में काव्य रूपी अमृत का सेवन उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को परिपक्व व सुदृढ़ बनाने में सहायक है। काव्यों की सूक्तियाँ, रसानुभूति, सौन्दर्यबोध मानव–जीवन को आनन्दि एवं आन्दोलित करने तथा जीवन जीने की कला सिखाने में समर्थ है।साधु–काव्य के सेवन से "सत्यं शिवं एवं सुन्दरम्" का समवेत बोध छात्र/छात्राओं को हो सके–एतदर्थ काव्य का अध्ययन/अध्यापन अपेक्षित है।

MJC-1: संस्कृत काव्य		Credit 6
Unit	**Topics to be covered**	**No. of Lecture**
1	भगवद्गीता-अध्याय 12 (भक्तियोग)	10
2	रघुवंशम् (प्रथम – सर्ग)	10
3	पूर्वमेघदूतम्	15
4	किरातार्जुनीयम्(प्रथम सर्ग)	15
	Turorial	10
	Total	60

Reading List:

1. रघुवँशमहाकाव्य (प्रथमसर्ग) टीका-मल्लिनाथ,अनुवाद-धारादात्मिश्रा, मोतीलाल बुक्स पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स अशोक राजपथ पटना|
2. रघुवंशमहाकाव्य, पं शेषराज शर्मा रेग्मी चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी शेषराज शर्मा रेग्मी चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी|
3. श्रीमद्भगवद्गीता व्याख्याकार–मदनमोहन अगवाल, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान वाराणसी, 1994
4. मेघदूतम, मोतीलाल बुक्स पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स अशोक राजपथ पटना|
5. जनार्दन शास्त्री, भारविकृत किरातार्जनीयम्, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6. जनार्दन शास्त्री, भारविकृत रिताजर्नीयम्, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
7. श्रीमद्भगद्गीता–एस० राधाकृष्णन कृत व्याख्या का हिन्दी अनुवाद, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली–, 1969
8. बाबूराम त्रिपाठी(सम्पा.), भर्तृहरि कृत नीतिशतकम् महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा, 1986

अधिगम उपलब्धिः–

- छात्र संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे।
- वह संस्कृत साहित्य पद्य की सुगीतात्मकता का सौंदर्यबोध कर सकेंगे।
- उनमें काव्य में प्रयुक्त रस, छंद, अलंकारों को समझने की क्षमता विकसित होगी।
- पद्य में निहित सूक्तियों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होगा।
- छात्रों के शब्दकोश में वृद्धि होने के साथ–साथ वह संस्कृत श्लोकों के शुद्ध और सस्वर उच्चारण के कौशल में निपुण बनेंगे

14/06/2023

14/6/23

StudyOrigin.com